

अन्नदाताओं को बड़ी राहत : राजस्थान में अब 19 जून तक होगी एमएसपी पर गेहूं की खरीद

मुख्यमंत्री के निर्देश पर खाद्य विभाग ने बढ़ाई अंतिम तिथि ; खरीद का लक्ष्य भी 23.50 लाख से बढ़ाकर 28.50 लाख मीट्रिक टन किया, ताकि कोई किसान न छूटे

लोक दुडे। जयपुर

राजस्थान के किसानों के लिए एक बेहद राहत भरी खबर है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के विशेष निर्देश पर राज्य के खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले विभाग ने रबी विपणन सीजन 2026-27 के तहत न्यूनतम समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीद की अंतिम तिथि को आगे बढ़ा दिया है। पूर्व में तय समय सीमा समाप्त होने के बाद भी कई मंडियों और खरीद केंद्रों पर किसानों की लंबी कतारों तथा पंजीकरण की स्थिति को देखते हुए सरकार ने खरीद की अंतिम तिथि को अब 19 जून 2026 तक बढ़ाने का आधिकारिक आदेश जारी कर दिया है।

खरीद का लक्ष्य 5 लाख मीट्रिक टन बढ़ा -

सरकार ने न केवल खरीद की अवधि बढ़ाई है, बल्कि इस सीजन के लिए तय किए गए कुल खरीद लक्ष्य में भी बढ़ा इजाफा किया है। प्रदेश में बंपर पैदावार और किसानों के भारी उत्साह को देखते हुए प्रारंभिक खरीद लक्ष्य को 23.50 लाख मीट्रिक टन से बढ़ाकर अब 28.50 लाख मीट्रिक टन कर दिया गया है। विभाग के शासन सचिव ने बताया कि इस फैसले का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि राज्य का एक भी पंजीकृत और इच्छुक किसान अपनी उपज



को समर्थन मूल्य पर बेचने से वंचित न रहे। **2400 प्रति विंटल की दर से मिल रहा भुगतान -**

गौरतलब है कि इस बार केंद्र सरकार द्वारा

घोषित गेहूं के न्यूनतम समर्थन मूल्य 2275 रुपये प्रति विंटल के ऊपर राजस्थान सरकार अपनी ओर से 125 रुपये प्रति विंटल का अतिरिक्त बोनस दे रही है। इसके चलते प्रदेश के किसानों से 2400 रुपये प्रति विंटल की दर से

गेहूं की खरीद की जा रही है, जो खुले बाजार (ओपन मार्केट) की कीमतों की तुलना में किसानों के लिए बेहद फायदेमंद साबित हो रही है। इसी आकर्षक दाम की वजह से इस बार खरीद केंद्रों पर रिकॉर्ड आवक दर्ज की जा रही है।

मौसम खराबे को देखते हुए पुख्ता इंतजाम के निर्देश -

हाल ही में प्रदेश के कई हिस्सों में आए पश्चिमी विक्षोभ, तेज आंधी और बेमौसम बारिश के अलर्ट को देखते हुए खाद्य विभाग ने सभी संभागों के कलेक्टर, राजफेड और भारतीय खाद्य निगम के अधिकारियों को विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश दिए हैं। खरीद केंद्रों और गोदामों में पड़े गेहूं को भीगने से बचाने के लिए तिरपाल और उचित ढके हुए स्थानों की व्यवस्था सुनिश्चित करने को कहा गया है, ताकि किसानों की मेहनत की फसल बर्बाद न हो।

ऑनलाइन टोकन और भुगतान प्रक्रिया तेज करने के आदेश -

सभी क्रय केंद्रों को पाबंद किया गया है कि वे बड़े हुए समय के भीतर किसानों को सुचारू रूप से ऑनलाइन टोकन जारी करें। इसके साथ ही मुख्यमंत्री कार्यालय से इस बात की भी निरंतर मॉनिटरिंग की जा रही है कि किसानों के खातों में उनकी फसल के भुगतान की राशि तय समय सीमा के भीतर ट्रांसफर हो जाए, जिससे उन्हें खरीद की अगली फसल की बुवाई के लिए खाद-बीज खरीदने में कोई आर्थिक परेशानी न आए।

गेहूं खरीद के नए आंकड़े :

नई अंतिम तिथि: 19 जून 2026 तक (बढ़ी हुई अवधि)
पुराना खरीद लक्ष्य: 23.50 लाख मीट्रिक टन
नया संशोधित लक्ष्य: 28.50 लाख मीट्रिक टन
कुल प्रभावी कीमत: 2,400 प्रति विंटल (एमएसपी 2275 + 125 राज्य बोनस)

भारत ने अफगानिस्तान को 7 विकेट से हराया



नई दिल्ली

भारत ने अफगानिस्तान को पहले वनडे में 7 विकेट से हरा दिया। टीम ने तीन मैचों की सीरीज में 1-0 की बढ़त बना ली। धर्मशाला में बारिश की वजह से 25-25 ओवर का मैच खेला गया। भारत ने टॉस जीतकर गेंदबाजी करने का फैसला किया। अफगानिस्तान की टीम 24.5 ओवर में 194 रन पर ऑलआउट हो गई। रहमानुल्लाह गुरबाज ने 48 गेंदों में अपना नौवां वनडे शतक लगाया। उन्होंने 8 चौके और 8 छक्के की मदद से 102 रन की पारी खेली। 195 रन का पीछा कर रही भारत ने 34 रन की पारी खेली। भारत की ओर से डेब्यू कर रहे हर्ष बड़े और गुरनूर बवार ने 3-3 विकेट लिए। अशदीप सिंह और नीतोश कुमार रेड्डी को 2-2 विकेट मिले। सीरीज का दूसरा मुकाबला 17 जून को लखनऊ में खेला जाएगा।

लेफ्टिनेंट जनरल धीरज सेठ होंगे अगले आर्मी चीफ

मैकेनाइज्ड वॉरफेयर के विशेषज्ञ, कश्मीर से लेकर एलएसी तक का अनुभव

लोक दुडे। न्यू दिल्ली

रक्षा मंत्रालय ने लेफ्टिनेंट जनरल धीरज सेठ को भारतीय सेना का नया धल सेनाध्यक्ष नियुक्त करने के आदेश जारी कर दिए हैं। वे 30 जून 2026 को वर्तमान सेनाध्यक्ष जनरल उपेंद्र द्विवेदी का स्थान लेंगे। मैकेनाइज्ड वॉरफेयर (बख्तरबंद युद्ध) के विशेषज्ञ माने जाने वाले धीरज सेठ वर्तमान में भारतीय सेना के उप-सेना प्रमुख हैं। दिसंबर 1986 में आर्मी कॉर्पस में कमीशन हुए लेफ्टिनेंट जनरल धीरज सेठ का सैन्य करियर चार दशक से अधिक लंबा रहा है। उन्होंने रंगिस्तानी क्षेत्रों में आर्मी रेजीमेंट, मैदानी इलाकों में आर्मी ब्रिगेड तथा जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद विरोधी अभियानों का नेतृत्व किया है। वे सेना की प्रतिष्ठित 'सुदर्शन चक्र कॉर्पस' के कमांडर भी रह चुके हैं। धीरज सेठ को अंतरराष्ट्रीय और प्रशासनिक स्तर पर भी व्यापक अनुभव प्राप्त है। उन्होंने अंगोला में संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन में ऑपरेशंस ऑफिसर के रूप में सेवाएं दीं। सेना मुख्यालय में सहायक सैन्य सचिव तथा महानिदेशक (अनुशासन, औपचारिक एवं कल्याण) जैसे महत्वपूर्ण पदों पर भी कार्य किया है।

चुनौतीपूर्ण दौर में मिली जिम्मेदारी -

धीरज सेठ ऐसे समय सेना की कमान संभालेंगे जब चीन के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा पर सतर्कता बनी हुई है और जम्मू-कश्मीर में



आतंकवादी गतिविधियों की चुनौतियां मौजूद हैं। रक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि बख्तरबंद युद्ध और सामरिक संचालन में उनकी विशेषज्ञता भारतीय सेना के आधुनिकीकरण और युद्ध क्षमता को नई गति दे सकती है।

इनकी प्रमुख उपलब्धियां -

- * 1986 में आर्मी कॉर्पस में कमीशन प्राप्त किया
- * रंगिस्तानी, मैदानी और आतंकवाद प्रभावित क्षेत्रों में कमान संभाली
- * 'सुदर्शन चक्र कॉर्पस' के कमांडर रहे
- * अंगोला में संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन में सेवाएं दीं

वर्तमान में भारतीय सेना के उप-सेना प्रमुख हैं

अहम है यह नियुक्ति?

धीरज सेठ को मैकेनाइज्ड फोर्स, काउंटर-इंसर्जेंसी ऑपरेशन और रणनीतिक सैन्य नियोजन का व्यापक अनुभव है। ऐसे में उनकी नियुक्ति को भारतीय सेना में नेतृत्व की निरंतरता, आधुनिकीकरण और थिएटर कमांड जैसी भविष्य की सैन्य योजनाओं को गति देने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

असम के जोरहाट में वायुसेना का विमान क्रैश, 5 जांबाज शहीद, को-पायलट घायल

लोक दुडे। न्यू दिल्ली

असम के जोरहाट एयरबेस पर भारतीय वायुसेना का एक एच-32 परिवहन विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस हादसे में वायुसेना के पांच जवानों ने देश की सेवा में सर्वोच्च बलिदान दिया, जबकि विमान का को-पायलट गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। वायुसेना अधिकारियों के अनुसार दुर्घटना के तुरंत बाद राहत एवं बचाव अभियान शुरू किया गया। हादसे की गंभीरता को देखते हुए भारतीय वायुसेना ने दुर्घटना के कारणों की जांच के लिए 'कोर्ट ऑफ इंच्वायरी' के आदेश जारी कर दिए हैं।

ये जवान हुए शहीद -

इस हादसे में वायुसेना के पांच जवान स्वर्णश्री लीडर प्रशांत सिंह, फ्लाइट लेफ्टिनेंट शुभम कुमार, सार्जेंट जितेंद्र शर्मा, खेमराम कुमावत व दानिश आलम शहीद हो गए हैं।

तकनीकी खराबी या मौसम? जांच में होगा खुलासा -

प्रारंभिक जानकारी के अनुसार



जताया गहरा दुःख -

पांच वायुसेना कर्मियों के निधन से गहरा दुःख हुआ है। स्वर्णश्री लीडर प्रशांत सिंह, फ्लाइट लेफ्टिनेंट शुभम कुमार, सार्जेंट जितेंद्र शर्मा, खेमराम कुमावत और अग्निवीरवायु दानिश आलम ने कर्तव्य निभाते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया। देश उनके साहस और सेवा को हमेशा गर्व और कृतज्ञता के साथ याद रखेगा। शोक-संतप्त परिवारों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं। दुख की इस घड़ी में देश मजबूती से उनके साथ खड़ा है।

राजनाथसिंह, रक्षा मंत्री

हादसा जोरहाट एयरबेस के निकट हुआ। दुर्घटना के पीछे तकनीकी खराबी, इंजन फेिलियर, मानवीय त्रुटि अथवा प्रतिकूल मौसम जैसी संभावित वजहों की जांच की जाएगी। जांच दल विमान के तकनीकी रिकॉर्ड, एयर ट्रेफिक कंट्रोल से हुई बातचीत और दुर्घटना से पहले की परिस्थितियों का अध्ययन करेगा। जांच में घायल को-पायलट का बयान भी अहम माना जा रहा है, क्योंकि हादसे के समय वह कॉकपिट में मौजूद थे। वायुसेना का कहना है कि जांच रिपोर्ट आने के बाद ही दुर्घटना के वास्तविक कारणों का पता चल सकेगा।

योगी ने राममंदिर चढ़ावे की जांच के लिए एसआईटी बनाई

मंदिर के कर्मचारी के घर 10 लाख मिले, गोबर के ढेर में छिपाए थे

अयोध्या

अयोध्या राम मंदिर में चढ़ावे के 7 करोड़ रुपए की चोरी के दावे का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। मंदिर ट्रस्ट ने शनिवार को सीएम योगी से चोरी के दावे की जांच (स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम) से कराने की मांग की। इसके कुछ ही घंटों बाद शासन ने 3 सदस्यीय एसआईटी बना दी है। एसआईटी 7 दिन में प्रारंभिक रिपोर्ट और 15 दिन में अंतिम रिपोर्ट देगी। एसआईटी आगे गडबडी न हो, इसके लिए भी सुझाव देगी।

वहीं, मंदिर के कर्मचारी लवकुश मिश्रा (27) के घर से 10 लाख रुपए बरामद हुए हैं। उसने रुपए गोबर में दबाकर छिपाए थे। इसके अलावा, कुछ पैसे



बक्से में भी रखे थे। हालांकि, ये रुपए किसके हैं, यह अभी पता नहीं चल पाया है। वहीं लवकुश के पिता ने भी रुपए मिलने की पुष्टि की है। सूत्रों के मुताबिक, लवकुश मंदिर में चढ़ावे की रकम गिनने का काम करता था। लवकुश की नौकरी उसके ससुर ने लगवाई थी। लवकुश का साला अनुकल्प मिश्रा पहले से मंदिर में नौकरी कर रहा था। सूत्रों के मुताबिक, अनुकल्प और लवकुश दोनों अभी पुलिस हिरासत में हैं।

राजस्थान महिला क्रिकेट को मिली नई सिलेक्शन कमेटी:भारती वर्मा बनीं चैयरपर्सन, पूनम, कोमल, सम्पा और सोफी बनीं मेंबर

जयपुर

राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन (आरसीए) की एडहॉक कमेटी ने बीसीसीआई के घरेलू क्रिकेट सत्र 2026-27 की तैयारियों को लेकर विमंस क्रिकेट की सिलेक्शन कमेटी का गठन कर दिया है। पूर्व भारतीय खिलाड़ी भारती वर्मा को कमेटी की चैयरपर्सन नियुक्त किया गया है। यह कमेटी अलग-अलग आयु वर्गों की राजस्थान महिला टीमों के संभावित खिलाड़ियों का सिलेक्शन करेगी। आरसीए एडहॉक कमेटी कन्वन्शन डॉ. मोहित जसवंत



यादव ने बताया- बीसीसीआई की आगामी विमंस घरेलू प्रतियोगिताओं को ध्यान में रखते हुए राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन राज्य स्तर पर

सीनियर, अंडर-23, अंडर-19 और अंडर-15 महिला प्रतियोगिताओं और दूसरी गतिविधियों का आयोजन करेगा। इन प्रतियोगिताओं में खिलाड़ियों के प्रदर्शन और प्रतिभा के आधार पर सिलेक्शन कमेटी राजस्थान की अलग-अलग आयु वर्ग की महिला टीमों के लिए संभावित खिलाड़ियों का सिलेक्शन करेगी। एडहॉक कमेटी सदस्य आशीष तिवाड़ी ने बताया- विमंस सिलेक्शन कमेटी के गठन के लिए आरसीए ने राज्य की पूर्व महिला क्रिकेटर्स से ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए थे।

मल्टी लेयर्ड बैलिस्टिक डिफेंस सिस्टम का टेस्ट कामयाब

नई दिल्ली।

भारत अब लंबी दूरी की बैलिस्टिक मिसाइलों, यहां तक कि इंटरकॉन्टिनेंटल बैलिस्टिक मिसाइल के खतरों का भी मुकाबला कर सकता है। DRDO ने 10 और 11 जून को लगातार 3 फ्लाइट टेस्ट किए

गए, जिनमें मल्टी-लेयर्ड बैलिस्टिक मिसाइल डिफेंस सिस्टम का प्रदर्शन किया गया। इसमें इंटरकॉन्टिनेंटल बैलिस्टिक मिसाइल क्लास तक के खतरों समेत बैलिस्टिक मिसाइलों को रोकने और बेअसर करने की क्षमता भी शामिल है। यह स्वदेशी तकनीक दुरमन की मिसाइलों को लक्ष्य तक पहुंचने से पहले हवा में ही नष्ट कर देती है। रक्षा

मंत्री राजनाथ सिंह ने 13 जून को टेस्टिंग की तस्वीरें एक्स अकाउंट पर शेयर की हैं। इसके साथ-साथ नेवल एंटी शिप मिसाइल-मॉडियम रेंज का भी टेस्ट किया गया। इसे भारत की समुद्री स्ट्राइक और डिफेंस रिकल को मजबूत करने की दिशा में एक बड़ी उपलब्धि माना जा रहा है।

प्लेन के टॉयलेट स्पीकर से 4 करोड़ का सोना जब्त:दो थैलियों में 24 सोने के बिस्कुट मिले, दुबई से अहमदाबाद पहुंची थी प्लाइट

अहमदाबाद

अहमदाबाद एयरपोर्ट पर के एक प्लेन से चार किलो सोना बरामद किया गया है। डायरेक्टोरेट ऑफ रेवेन्यू इंटेलीजेंस (डीआरआई) के अधिकारियों ने प्लेन पर छापा मारा और प्लेन के टॉयलेट से बरामद किया। इंडिगो का यह प्लेन गुरुवार को दुबई से अहमदाबाद पहुंचा था। गोल्ट कौन लेकर आया था, इसकी जांच की जा रही है। गुप्त सूचना के आधार पर अधिकारियों ने प्लेन की जांच की। जांच के दौरान टॉयलेट में लगे स्पीकर बॉक्स के अंदर दो थैलियां मिलीं। इन थैलियों में 24 सोने के बिस्कुट्स रखे हुए थे। इन 999 कैरेट के बिस्कुटों की प्लाइट 6ई-1478 अहमदाबाद एयरपोर्ट पर पहुंची तो उसकी जांच शुरू की गई। टॉयलेट से पहले भी गोल्ट स्मगलिंग की घटनाएं सामने आ चुकी हैं। इसलिए एक टीम ने टॉयलेट की बारीकी से जांच की। टॉयलेट का स्पीकर बॉक्स निकाला गया तो उसका वजन काफी ज्यादा महसूस हुआ। जब बॉक्स खोला गया तो उसके अंदर ब्लैक कलर के टेप में लिपटे दो पाउच निकले। पाउच में 999.0 शुद्धता (24 कैरेट) के 24 विदेशी मूल के सोने के बिस्कुट पाए गए। इनका कुल वजन 2,799.3 ग्राम था।

सम्पादकीय

फिर भड़का युद्ध



अमेरिका और ईरान के बीच फिर से युद्ध छिड़ने के कारण न केवल पश्चिम एशिया का संकट और गहरा गया है, बल्कि विश्व अर्थव्यवस्था के लिए भी समस्याएं बढ़ गई हैं। अमेरिकी हमलों के जवाब में ईरान ने जिस तरह होमर्ज समुद्री जल मार्ग को फिर से बंद करने का फैसला किया, उसके बाद अमेरिका और उसके बीच तनाव तो बढ़ेगा ही, खाड़ी के देशों से होने वाली तेल और गैस की आपूर्ति के भी बिल्कुल टप होने का अंदेश है।

इसके चलते पहले से ही चढ़ते तेल एवं गैस के मूल्य और बढ़ सकते हैं। इससे भारत समेत अन्य देशों और विशेष रूप से एशियाई देशों का संकट और बढ़ेगा। इससे खराब बात और कोई नहीं कि अमेरिका और ईरान के बीच समझौते की जो थोड़ी-बहुत गुंजाइश बन रही थी, वह भी समाप्त होती दिख रही है। इसके लिए दोनों ही पक्षों का अड़ियल रवैया जिम्मेदार है।

जहां अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप यह चाहते हैं कि ईरान उनके मन मुताबिक समझौता करे, वहीं ईरानी नेतृत्व ने तो परमाणु हथियार बनाने के अपने इरादे का परिचय करने को तैयार है और न ही होमर्ज पर अपना दावा छोड़ने के लिए। वह इजरायल के लिए खतरा बने हिजबुल्ला को समर्थन देने से पीछे हटने के लिए भी तैयार नहीं। वह यह तो चाहता है कि इजरायल लेबनान में हिजबुल्ला के ठिकानों पर हमला करने से बाज आए, लेकिन वह इस संगठन को इजरायल को निशाना बनाने से रोकने के लिए तैयार नहीं।

समस्या केवल यह नहीं है कि ईरान होमर्ज पर अवैध कब्जा करना चाहता है, बल्कि यह भी है कि अमेरिकी सेना उसके बंदरगाहों की नाकेबंदी के चलते इस समुद्री जल मार्ग से इस बहाने जहाजों को नहीं निकलने दे रहा है कि वे या तो ईरान जा रहे थे या फिर वहां से आ रहे थे। इसी को आधार पर बनाकर उसने पिछले चार दिनों में तीन जहाजों पर हमले किए।

इनमें से दो पलाऊ और एक गिनी-बिसाऊ का था, लेकिन इन तीनों में भारतीय नाविक सवार थे। इनमें से एक जहाज पर अमेरिकी हमला घातक साबित हुआ। इस हमले में तीन भारतीय नाविक मारे गए। साफ है कि अमेरिकी सेना निहायत ही गैर जिम्मेदारी का परिचय दे रही है। वह जहाजों को रोकने, जब करने के बजाय जिस तरह उन्हें ध्वस्त करने का काम कर रही है, वह अस्वीकार्य और अक्षम्य है।

यह सर्वथा उचित है कि भारत ने अपने तीन भारतीय नाविकों के मारे जाने की घटना पर अमेरिकी राजनयिक को तलब कर अपना विरोध दर्ज कराया, लेकिन केवल इतना ही पर्याप्त नहीं। उसे विश्व के अन्य देशों के साथ मिलकर अमेरिका और ईरान पर इसके लिए दबाव बनाना होगा कि वे कारोबारी जहाजों को निशाना बनाने से बाज आए। भारत को ऐसा इसलिए करना होगा, क्योंकि खाड़ी क्षेत्र में 18 हजार से अधिक भारतीय नाविक देसी-विदेशी जहाजों पर कार्यरत हैं।

सफल लोग कभी भी हार नहीं मानते, बल्कि उन्हें अपनी गलतियों से सिखने का एक अवसर मिलता है।

सांसद और विधायक भाग रहे, क्या ममता बनर्जी भी टीएमसी छोड़ कर कांग्रेस में जा रही हैं...?

पश्चिम बंगाल की राजनीति इस समय अपने सबसे उथल पुथल भरे दौर से गुजर रही है। कभी बंगाल की निर्वाचन ताकत मानी जाने वाली ममता बनर्जी की तुणमूल कांग्रेस अब अंदरूनी बगावत, सांसदों और विधायकों के पलायन तथा राजनीतिक अस्तित्व के संकट से जूझती दिखाई दे रही है। दिल्ली में सोनिया गांधी के साथ ममता बनर्जी और राहुल गांधी के साथ अभिषेक बनर्जी की बैठकों ने इस संकट को और अधिक राजनीतिक रंग दे दिया है। भले ही कांग्रेस और तुणमूल दोनों सार्वजनिक रूप से किसी विलय की संभावना से इंकार कर रहे हों, लेकिन घटनाक्रम यह संकेत दे रहा है कि बंगाल की राजनीति में एक बड़ा पुनर्संयोजन शुरू हो चुका है। एक तरह से यह साफ नजर आ रहा है कि सिर्फ टीएमसी के सांसद, विधायक और पार्षद ही पाला नहीं बदल रहे हैं खुद टीएमसी प्रमुख अपनी पार्टी को खत्म कर कांग्रेस में वापस लौटना चाह रही हैं।

हम आपको बता दें कि दिल्ली में राहुल गांधी और अभिषेक बनर्जी की डेढ़ घंटे लंबी मुलाकात तथा उससे पहले सोनिया गांधी और ममता बनर्जी की बैठक ने राजनीतिक गलियारों में हलचल पैदा कर दी है। तुणमूल कांग्रेस ने इन बैठकों को लोकतंत्र और संविधान बचाने की साझा प्रतिबद्धता बताया, लेकिन राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि यह महज औपचारिक बातचीत नहीं थी। बंगाल विधानसभा चुनावों के बाद जिस तरह तुणमूल कांग्रेस कमजोर हुई है और पार्टी के भीतर टूट की स्थिति बनी है, उसके बाद कांग्रेस से नजदीकी बनाना ममता बनर्जी की राजनीतिक मजबूरी बन गई है।

स्थिति यह है कि तुणमूल कांग्रेस के भीतर विद्रोह अब खुली चुनौती का रूप ले चुका है। पार्टी के 80 में से 58 विधायक अलग होकर निष्कासित विधायक रिक्तता बनर्जी के नेतृत्व वाले गुट के साथ चले गए हैं। इस गुट को विधानसभा में मुख्य विपक्षी दल के रूप में मान्यता भी मिल चुकी है। रिक्तता बनर्जी लगातार दावा कर रहे हैं कि वही असली तुणमूल कांग्रेस हैं और कांग्रेस के साथ किसी भी प्रकार के विलय या समझौते के खिलाफ हैं। उनका दावा है कि उनके साथ विधायकों की संख्या लगातार बढ़ रही है और कई सांसद भी उनके संपर्क में हैं।

राजनीतिक जाकारों का मानना है कि कांग्रेस के साथ संभावित विलय या अत्यधिक नजदीकी की अटकलों ने तुणमूल कांग्रेस के भीतर असुरक्षा और बेचैनी को और बढ़ा दिया है। पार्टी के कई विधायक,



सांसद और क्षेत्रीय नेता अपनी पूरी राजनीतिक पहचान कांग्रेस विरोधी की जमीन पर बनाकर आगे बढ़े थे। ऐसे में उन्हें यह डर सता रहा है कि यदि ममता बनर्जी अंततः कांग्रेस के साथ विलय या व्यापक राजनीतिक समझौते की राह पर चलती हैं, तो उनकी स्वतंत्र राजनीतिक पहचान समाप्त हो जाएगी। यही कारण है कि तुणमूल में भगदड़ और तेज होने की संभावना जताई जा रही है। पार्टी के भीतर एक बड़ा वर्ग ऐसा है जो कांग्रेस में लौटने के पक्ष में नहीं है और वह या तो अलग गुट के साथ रहना चाहता है या फिर नए राजनीतिक विकल्प तलाश रहा है। यही बेचैनी अब खुले विद्रोह और लगातार इस्तीफों के रूप में सामने आती दिखाई दे रही है।

संकट केवल विधानसभा तक सीमित नहीं है। संसद में भी तुणमूल कांग्रेस की नींव हिलती दिख रही है। राज्यसभा सांसद प्रकाश चिक बराइक के इस्तीफे ने पार्टी की मुश्किलें और बढ़ा दी हैं। उनसे पहले सुभिता देव और सुखेंद्रु शेखर राय भी पार्टी और राज्यसभा से इस्तीफा दे चुके हैं। सुभिता देव की असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा से मुलाकात ने यह अटकलें और तेज कर दी हैं कि तुणमूल कांग्रेस के कई नेता अब भारतीय जनता पार्टी की ओर रुख कर सकते हैं। लोकसभा में भी तुणमूल के भीतर विद्रोही खेमे की ताकत बढ़ती दिखाई दे रही है। कालोली घोष दस्तदार के नेतृत्व वाला गुट दावा कर रहा है कि उसे बीस से अधिक सांसदों का समर्थन हासिल है। सयौनी घोष,

माला राय, युसुफ पठान, शताब्दी राय, शत्रुघ्न सिन्हा और रचना बनर्जी जैसे कई चर्चित नाम विद्रोही खेमे के साथ बताए जा रहे हैं। बताया जा रहा है कि यह गुट राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार को समर्थन देने के लिए लोकसभा अध्यक्ष को पत्र लिख चुका है।

इन घटनाओं के बीच कांग्रेस की भूमिका बेहद दिलचस्प हो गई है। बंगाल कांग्रेस के भीतर भी मतभेद खुलकर सामने आ गए हैं। अधीर रंजन चौधरी और अब्दुल मन्नान जैसे वरिष्ठ नेता ममता बनर्जी के साथ किसी भी तरह की नजदीकी के खिलाफ खुलकर बोल रहे हैं। मन्नान ने तो यहां तक कह दिया कि गंदे पानी को साफ पानी में मिलाने से साफ पानी भी गंदा हो जाता है। अधीर रंजन चौधरी ने ममता पर कांग्रेस को बंगाल से खत्म करने का आरोप लगाते हुए कहा कि अब वही ममता गांधी परिवार के सहारे को तलाश में हैं।

दूसरी ओर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष शुभकर सरकार ने अपेक्षाकृत नरम रुख अपनाया है। उन्होंने कहा कि जो राहुल गांधी को भविष्य का प्रधानमंत्री और विपक्ष का नेता मानता है, उसका स्वागत है। हालांकि उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि भ्रष्टाचार के आरोपों से बचने के लिए कांग्रेस की छतरी का इस्तेमाल करने वालों के लिए दरवाजे खुले नहीं हैं। यह बयान सीधे तौर पर तुणमूल के उन नेताओं की ओर इशारा माना जा रहा है जिन पर विभिन्न घोटालों के आरोप लगे हैं।

हम आपको याद दिला दें कि ममता बनर्जी का

गृहिणियां राष्ट्र निर्माता हैं, समझिए कैसे उनके कार्यगत योगदान को कदापि कम मत आंकिए

भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने हाल ही में गृहिणियों के योगदान पर एक महत्वपूर्ण फैसला देते हुए कहा कि गृहिणियां राष्ट्र निर्माता हैं और उनके घरेलू व देखभाल संबंधी कार्यों का वास्तविक आर्थिक मूल्य है। सुप्रीम कोर्ट ने अपनी प्रमुख टिप्पणियों में कहा कि गृहिणी को केवल आश्रित मानना गलत है; वास्तव में पूरा परिवार उनके श्रम और देखभाल पर निर्भर रहता है।

लिहाजा, महिलाओं द्वारा किया जाने वाला अवैतनिक घरेलू और देखभाल कार्य भारत की त्थक में अनुमानतः 15-17% तक योगदान देता है, फिर भी उसे पर्याप्त मान्यता नहीं मिलती। यह गृहिणियां ही हैं जो बच्चों के पालन-पोषण, शिक्षा, संस्कार और मानव संसाधन निर्माण के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में प्रत्यक्ष भूमिका निभाती हैं। इसलिए अदालत ने कहा कि घरेलू कार्य को आर्थिक विश्लेषण से बाहर रखना उचित नहीं है और कानून को गृहिणियों के श्रम, सेवा और त्याग का मूल्य स्वीकार करना चाहिए। निष्कर्ष यह कि गृहिणियां राष्ट्र निर्माता हैं, इसलिए उनके कार्यगत योगदान को कम मत आंकिए।

देखा जाए तो एक ऐतिहासिक कदम के रूप में सुप्रीम कोर्ट ने मोटर दुर्घटना मुआवजा मामलों में गृहिणी के घरेलू योगदान का मूल्यांकन करते हुए कम-से-कम 30,000 प्रतिमाह का मानक निर्धारित किया है तथा loss of domestic care को अलग क्षतिपूर्ति मद के रूप में मान्यता दी है। बता दें कि सुप्रीम कोर्ट ने पहले भी कहा था कि, गृहिणी का घर में किया गया कार्य उसके कार्यालय जाने वाले पति के काम से कम मूल्यवान नहीं है। इसलिए न्यायपालिका का दृष्टिकोण अब स्पष्ट रूप से यह है कि गृहिणियां

केवल परिवार की देखभाल करने वाली नहीं, बल्कि आर्थिक योगदानकर्ता और राष्ट्र निर्माता हैं। चुनौती अब यह है कि सरकारें, निजी संस्थान और समाज इस न्यायिक मान्यता को सामाजिक और आर्थिक नीतियों में कितना उतारते हैं। इस बात में कोई दो राय नहीं कि गृहिणियों का योगदान भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता है, लेकिन विडंबना यह है कि उनके श्रम को अक्सर काम के बजाय कर्तव्य मान लिया जाता है।

इसी कारण उनके योगदान को वह संस्थागत मान्यता नहीं मिल पाती जिसकी वे हकदार हैं। सवाल है कि गृहिणियों का आर्थिक योगदान कितना बढ़ा है? तो अर्थशास्त्रियों और विभिन्न अध्ययनों के अनुसार यदि घर के भीतर किए जाने वाले कार्य-जैसे भोजन बनाना, बच्चों की देखभाल, बुजुर्गों की सेवा, घरेलू प्रबंधन, भावनात्मक देखभाल आदि-का बाजार मूल्य जोड़ा जाए, तो इसका योगदान त्थक के 15% से 40% तक आंका गया है। भारत में कई अध्ययनों ने इसे लगभग 15-17% या उससे भी अधिक बताया है।

सवाल है कि फिर भी उनके इन महत्वपूर्ण कार्यों को मान्यता क्यों नहीं मिलती? तो जवाब

निम्नलिखित होगा:- पहला, जीडीपी की गणना का तरीका: जीडीपी केवल उन वस्तुओं और सेवाओं को गिनता है जिनका बाजार में लेन-देन होता है। गृहिणी का श्रम घर के भीतर होता है, इसलिए वह राष्ट्रीय आय के आंकड़ों में सीधे नहीं दिखता।

दूसरा, ऐतिहासिक सामाजिक दृष्टिकोण: सदियों से घरेलू कार्यों को महिलाओं का स्वाभाविक दायित्व माना गया। जब किसी कार्य को कर्तव्य मान लिया जाता है, तो उसका आर्थिक मूल्यांकन कम हो जाता है।

तीसरा, श्रम का अदृश्य होना: एक गृहिणी दिनभर में दर्जनों काम करती है, लेकिन वे छोटे-छोटे हिस्सों में बंटे होते हैं। इसलिए उनका श्रम उतना दिखाई नहीं देता जितना किसी कार्यालय या फैक्ट्री में काम करने वाले व्यक्ति का।

चौथा, नीति निर्माण में कम प्रतिनिधित्व: सत्ता और नीति-निर्माण संस्थानों में लंबे समय तक पुरुषों का वर्चस्व रहा। परिणामस्वरूप घरेलू श्रम के आर्थिक मूल्यांकन का प्रश्न प्राथमिकता नहीं बन पाया।

पांचवां, वेतन और मूल्य का भ्रम: समाज अक्सर मानता है कि जिस काम के बदले वेतन नहीं मिलता, उसका आर्थिक मूल्य भी नहीं है। जबकि गृहिणी का श्रम परिवार की आय और उत्पादकता को

पूरा राजनीतिक उदय ही कांग्रेस के खिलाफ विद्रोह की जमीन पर खड़ा हुआ था। वर्ष 1998 में उन्होंने जोरशोर से कांग्रेस से अलग होकर तुणमूल कांग्रेस का गठन किया था। उस समय ममता ने कांग्रेस नेतृत्व पर बंगाल की राजनीति की अनदेखी करने और वामपंथ के सामने आत्मसमर्पण करने का आरोप लगाया था। इसके बाद उन्होंने खुद को कांग्रेस के विकल्प के रूप में स्थापित किया और धीरे धीरे बंगाल में कांग्रेस की जड़ें कमजोर कर दीं। वर्ष 2011 में वाम मोर्चे को सत्ता से हटाने के बाद ममता बनर्जी ने अपने राजनीतिक विस्तार के लिए कांग्रेस से पूरी दूरी बना ली थी और लगातार गांधी परिवार तथा कांग्रेस नेतृत्व पर तीखे हमले करती रहीं। लेकिन अब जब तुणमूल कांग्रेस भीतर से टूट रही है, सांसद और विधायक पार्टी छोड़ रहे हैं और राजनीतिक जमीन खिसकती दिखाई दे रही है, तब वही ममता बनर्जी एक बार फिर कांग्रेस की जड़ों की ओर लौटती नजर आ रही हैं। यही वजह है कि दिल्ली में गांधी परिवार के साथ उनकी बैठकों को केवल शिष्टाचार मुलाकात मानने को राजनीतिक विश्लेषक तैयार नहीं हैं।

दरअसल, बंगाल की राजनीति अब केवल सत्ता की लड़ाई नहीं रह गई है, बल्कि यह अस्तित्व की जंग बन चुकी है। तुणमूल कांग्रेस संगठनात्मक बिखराव से जूझ रही है और बात सिर्फ संसद या विधानसभा में उसके सदस्यों तक सीमित नहीं रह गयी है। बंगाल में कई निर्गमों से उसके महापौर या पार्षद इस्तीफा दे चुके हैं और पंचायतों में भी इसी तरह के इस्तीफों का दौर जारी है। इस सबके बीच भाजपा यह स्पष्ट कर चुकी है कि तुणमूल कांग्रेस के नेताओं के लिए उसके दरवाजे बंद हैं वहीं कांग्रेस इस संकट को अपने पुनर्जीवन के अवसर के रूप में देख रही है। राहुल गांधी के नेतृत्व में विपक्षी एकता की राजनीति को मजबूती देने के लिए कांग्रेस बंगाल में नई संभावनाएं तलाश रही है।

बहरहाल, सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या ममता बनर्जी कांग्रेस के साथ राजनीतिक समझौते की राह पर चलेंगी, या फिर पार्टी के भीतर का विद्रोह उन्हें और कमजोर कर देगा। यदि तुणमूल कांग्रेस का टूटना जारी रहा तो बंगाल की राजनीति में शक्ति संतुलन पूरी तरह बदल सकता है। आने वाले नगर निकाय चुनाव और उपचुनाव इस बदलाव की पहली बड़ी परीक्षा साबित होंगे। फिलहाल इतना तय है कि बंगाल की राजनीति में शुरू हुई यह हलचल केवल राज्य तक सीमित नहीं रहने वाली, बल्कि राष्ट्रीय विपक्ष की राजनीति पर भी इसका गहरा असर पड़ने वाला है।



प्रत्यक्ष रूप से बढ़ता है। सवाल है कि निजी क्षेत्र और सरकारें क्या कर सकती हैं?

तो अपेक्षाएं निम्नलिखित होंगी:- पहला, घरेलू श्रम का नियमित आर्थिक मूल्यांकन। दूसरा, जगणपान और राष्ट्रीय सर्वेक्षणों में गृहिणी श्रम का अलग लेखा-जोखा। तीसरा, सामाजिक सुरक्षा, पेंशन और बीमा योजनाओं का विस्तार। चौथा, घरेलू कार्यों को अनपेक्षित वर्क के रूप में नीति दस्तावेजों में मान्यता। और पांचवां, परिवारों में घरेलू जिम्मेदारियों का अधिक समान वितरण।

जानिए, राष्ट्र निर्माण में गृहिणियों की भूमिका गृहिणी केवल घर नहीं संभालती, वह भविष्य की पीढ़ी का निर्माण करती है। एक शिक्षक, डॉक्टर, सैनिक, वैज्ञानिक, उद्यमी या नेता बनने से पहले हर व्यक्ति किसी परिवार में पलता-बढ़ता है। उस प्रक्रिया में गृहिणियों का योगदान आधारशिला जैसा होता है। इसलिए यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि गृहिणियां केवल परिवार निर्माता नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माता भी हैं। चुनौती यह है कि समाज और संस्थाएं इस योगदान को भावनात्मक सम्मान के साथ-साथ आर्थिक और नीतिगत मान्यता भी दें।

विशेष आलेख / राशिफल

असम-नगालैंड के बीच दशकों का विवाद स्वतम तेल समझौता संपन्न, शाह ने पूर्वोत्तर का भाग्य ही बदल दिया

ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रही मोदी सरकार को पूर्वोत्तर से एक बड़ी रणनीतिक सफलता मिली है। केंद्र, असम और नगालैंड के बीच तेल और प्राकृतिक गैस अन्वेषण को लेकर हुआ त्रिपक्षीय समझौता भारत को ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के अभियान का निर्णायक अध्याय है। दशकों से विवाद और अस्थिरता में फंसे असम, नगालैंड सीमा क्षेत्र में तेल खोज का रास्ता खोलकर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उस मिशन को नई ताकत दे दी है, जिसका लक्ष्य विदेशी तेल निर्भरता घटाकर भारत को ऊर्जा महाशक्ति बनाना है। यही वजह है कि अमित शाह ने इसे विकास पूर्वोत्तर और आत्मनिर्भर भारत की दिशा में ऐतिहासिक कदम बताया है।



हम आपको बता दें कि असम और नगालैंड की सीमा से लगे विवादित क्षेत्र में तीन दशक से अधिक समय से तेल और खनिज अन्वेषण ठप पड़ा था। अधिकार क्षेत्र को लेकर दोनों राज्यों के बीच तनाव बना रहता था, जिसके कारण हजारों करोड़ रुपये की संपदा जमीन के नीचे दबी रह गई। अब इस समझौते के तहत एक हजार वर्ग किलोमीटर से अधिक क्षेत्र में तेल, गैस और खनिज संसाधनों की खोज और उत्पादन का रास्ता खुल गया है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि दोनों राज्यों ने संसाधनों के बंटवारे पर 50-50 की सहमति बनाई है। यही वह राजनीतिक परिपक्वता है जिसने इस समझौते को टकराव से निकालकर साझेदारी के मांडल में बदल दिया। अमित शाह ने दावा किया कि इस एक समझौते

से प्रतिदिन एक हजार से पंद्रह सौ बैरल तेल उत्पादन क्षमता को दस गुना तक बढ़ाया जा सकता है। केवल एक तेल क्षेत्र से पंद्रह हजार करोड़ रुपये से अधिक की संभावित प्राप्ति का अनुमान जताया गया है। यह बयान केवल आर्थिक संभावना का संकेत नहीं, बल्कि उस रणनीतिक दिशा का संकेत है जिसमें भारत तेजी से आगे बढ़ना चाहता है। वैश्विक भू-राजनीतिक तनाव, पश्चिम एशिया में अस्थिरता और ऊर्जा आपूर्ति संकटों के दौर में भारत लंबे समय से आयातित तेल पर निर्भरता घटाने की कोशिश कर रहा है। ऐसे समय में पूर्वोत्तर के विशाल तेल और गैस भंडार भारत के लिए नई ऊर्जा रीढ़ साबित हो सकते हैं। दरअसल यह समझौता केवल तेल निकालने का मसला नहीं है।

क्या कहते है आपके सितारें....?



आपका दिन मिश्रित फलदायी है। आपका स्वास्थ्य नरम-गरम रहेगा। फिर भी मानसिक शांति प्राप्त कर पाएंगे। काम करने का उत्साह मंद होगा।



आर्थिक, सामाजिक और पारिवारिक दृष्टि से आपके लिए आज का दिन लाभदायी है। गृहस्थजीवन का संपूर्ण आनंद ले पाएंगे। मित्रों के साथ किसी रमणीय स्थल पर घूमने जा सकते हैं।



आज का दिन गृहस्थ एवं दान्त्य जीवन के लिए बहुत अनुकूल है। स्वास्थ्य की दृष्टि से आज का दिन अच्छा है। भाई-बंधुओं के साथ समय आनंदपूर्वक गुजरेगा। उनसे लाभ भी होगा।



आप का दिन शुभ फलदायी है। आज आपकी रचनात्मक और कलात्मक शक्ति निखरेगी। शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य का खास ध्यान रखें।



आनंद-प्रमोद, मनोरंजन के पीछे धन खर्च होगा। मानसिक चिंता एवं शारीरिक कष्ट के कारण आप परेशान रहेंगे। बातचीत में किसी के साथ घलतफहमी न हो।



आज का दिन गृहस्थ एवं दान्त्य जीवन के लिए बहुत अनुकूल है। स्वास्थ्य की दृष्टि से आज का दिन अच्छा है। भाई-बंधुओं के साथ समय आनंदपूर्वक गुजरेगा। उनसे लाभ भी होगा।



आपके लिए आज का दिन मिश्रित फलदायी है। आज आप में आनंद एवं स्फूर्ति का अभाव रहेगा। मन में किसी बात की चिंता रह सकती है। घर में झगड़े का वातावरण रहेगा।



आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। सारा दिन आप आनंद और उल्लास में गुजराने वाले हैं। दिन के सभी काम योजनानुसार पूरे होंगे।



आपका आज का दिन शुभ फलदायी है। स्वास्थ्य की दृष्टि से आज का दिन अच्छा है। भाई-बंधुओं के साथ समय आनंदपूर्वक गुजरेगा। उनसे लाभ भी होगा।



आप का दिन संघर्षमय रहेगा। आज के दिन आग, पानी या वाहन संबंधित दुर्घटना हो सकती है। आप सावधान रहें। व्यापार में चिंता बनी रहेगी।



आज का दिन आपके लिए शुभ फल देने वाला है। अपनी मीठी वाणी से किसी का भी दिल आप जीत सकते हैं। आपके काम सिद्ध होने की काफी संभावना है।



आज आकस्मिक धन लाभ के योग हैं। मानसिक तथा शारीरिक श्रम के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। सर्दी, सांस की तकलीफ, खांसी और पेट दर्द की परेशानी हो सकती है।



सेहत को प्रभावित कर रही है बढ़ती गर्मी

चिलचिलाती गर्मी जहां निर्जलीकरण का कारण बनती है, वहीं बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक में तेज धूप और गर्मी के कारण सिरदर्द और डायरिया का जोखिम बढ़ रहा है। जानते हैं हीट एजॉर्शन के नुकसान और बचने के उपाय गर्मी का सितम दिनों दिन बढ़ रहा है और इसी के चलते दिल्ली का तापमान 44 डिग्री तक पहुंच चुका है। यहां कई इलाकों में गर्मी का प्रकोप बढ़ने से लू के कारण रेड अलर्ट घोषित किया गया है। चिलचिलाती गर्मी जहां निर्जलीकरण का कारण बनती है, वहीं बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक में तेज धूप और गर्मी के कारण सिरदर्द और डायरिया का जोखिम बढ़ रहा है। जानते हैं हीट एजॉर्शन के नुकसान और इससे बचने के उपाय।

सेहत के लिए क्यों खतरनाक है गर्मी का ज्यादा बढ़ना- अत्यधिक गर्मी के संपर्क में रहने से शरीर में हीट स्ट्रोक का खतरा बना रहता है। वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन के मुताबिक गर्मी का प्रभाव बढ़ने से पैरों में क्रेम्प, चक्कर आना, सिरदर्द और डिजिनेस बढ़ने लगती है। इंटरनल मेडिसिन एक्सपर्ट डॉ पी वेंकट के अनुसार हीट स्ट्रोक के चलते अनुसर बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी को थकान महसूस होना, अत्यधिक पसीना और हीट क्रेम्प का सामना करना पड़ता है। इस बारे में फिजीशियन डॉ सौम्या गुप्ता बताती हैं कि तापमान बढ़ने के चलते शरीर का थर्मोरेग्यूलेशन असंतुलित होने लगता है। जिससे हीटस्ट्रोक की समस्या का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में गर्भवती महिलाओं, हृदय रोगियों, बच्चों और बुजुर्गों को इस समस्या से बचने के लिए कुछ खास बातों का ध्यान रखना जरूरी है। हीट एजॉर्शन से बचने के लिए शरीर में इलेक्ट्रोलाइट्स की मात्रा को बनाए रखना जरूरी है। इससे शरीर हाइड्रेट रहता है।

1. सिर को ढके- विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार धूप के संपर्क में आने से सिर, आंखों, स्किन, बालों और होठों पर बुरा प्रभाव नज़र आने लगता है। ऐसे में तेज गर्मी से बचने के लिए स्कार्फ, कैप, हैट और छाते का प्रयोग करें। इसके अलावा आंखों को प्रोटेक्ट करने के लिए काला चश्मा जरूर पहनें। साथ ही दोपहर के समय बाहर निकलने से भी बचना चाहिए।

2. आउटडोर एक्टिविटी से बचें- लू से शरीर को बचाने के लिए आउटडोर खेलों से बचें। इससे शरीर में निर्जलीकरण का जोखिम कम हो जाता है। लगातार बढ़ते तापमान को देखते हुए इनडोर खेलों में हिस्सा लें और शरीर को ठंडा रखने का प्रयास करें। अन्यथा थकान, चक्कर आने और बेहोशी का सामना करना पड़ सकता है।

3. ठंडे और देसी शरबत पीते रहें- आहार में नींबू पानी, नारियल पानी, बेल का शरबत और सत्तू जैसे नेचुरल ड्रिंक्स को अपने रूटीन में शामिल करें। इससे शरीर में इलेक्ट्रोलाइट्स का नियमित स्तर बना रहता है। इसके अलावा मौसमी फलों और सब्जियों का सेवन करने से इससे ड्राइजेशन बूस्ट करने में मदद मिलती है।

4. बाहर का खाना खाने से परहेज करें- ताज़ा और घर का पका खाना खाने से शरीर नॉजिया, सिरदर्द डायरिया



के खतरे से बचा रहता है। ऐसे में मसालेदार और ऑयली खाना खाने की जगह हल्का खाना खाएं और घर का पका खाना आहार में शामिल करें। इसके अलावा किसी भी मील को रिकप करने से बचें। इससे शरीर में एनर्जी की कमी को सामना करना पड़ता है। साथ ही कमजोरी और थकान बढ़ने लगती है।

गर्मी में बुजुर्गों का इस प्रकार से रखें ख्याल
तेज धूप में बाहर निकलने से बचें। इससे शरीर में थकान बढ़ने लगती है और शरीर का संतुलन खोने लगता है। इससे चक्कर आने की संभावना बनी रहती है।
बासी खाना खाने से बचें और घर का पका ताज़ा और हल्का खाना अपने आहार में शामिल करें।

के खतरे से बचा रहता है। ऐसे में मसालेदार और ऑयली खाना खाने की जगह हल्का खाना खाएं और घर का पका खाना आहार में शामिल करें। इसके अलावा किसी भी मील को रिकप करने से बचें। इससे शरीर में एनर्जी की कमी को सामना करना पड़ता है। साथ ही कमजोरी और थकान बढ़ने लगती है।

गर्मी में बुजुर्गों का इस प्रकार से रखें ख्याल
तेज धूप में बाहर निकलने से बचें। इससे शरीर में थकान बढ़ने लगती है और शरीर का संतुलन खोने लगता है। इससे चक्कर आने की संभावना बनी रहती है।
बासी खाना खाने से बचें और घर का पका ताज़ा और हल्का खाना अपने आहार में शामिल करें।

ज्यादा मात्रा में चाय और कॉफी का सेवन करने से बचें। इससे शरीर में निर्जलीकरण का खतरा बना रहता है।
कमरे का तापमान गर्म न रहने दें। शरीर का ठंडा रखने के लिए एयर कंडीशनर, कूलर और पंखे के सामने बैठें।
हल्के रंगों और ब्रॉथएबल फ़ैब्रिक यानि कॉटन के कपड़े पहनें। इससे शरीर गर्मी के प्रकोप से दूर रहता है।
बच्चों का गर्मी में ऐसे रखें ख्याल- धूप में निकलने से बचें। इससे बच्चों में डिहाइड्रेशन का खतरा बना रहता है। घर से बाहर निकलने से पहले पानी की बोतल अपने साथ रखें। गर्मी में लगातार खेलने से बच्चों में थकान बढ़ने लगती है। ऐसे में दिन में कुछ देर उनके आराम के लिए समय निकालें। इससे बच्चे के शरीर में एनर्जी बनी रहती है।

घुटनों का दर्द दूर कर उन्हें मजबूत बनाती हैं ये एक्सरसाइज़, जानिए अभ्यास का सही तरीका

टिके रहने दें। इस दौरान हाथों को भी अंदर की ओर मोड़े और सीधा कर लें। एक्सरसाइज़ के साथ गहरी सांस लें और छोड़ें। **3. नी ब्रेण्डस-** शरीर में उम्र के साथ हार्मोन में बदलाव आने लगते हैं। साथ ही हड्डियों की कमजोरी भी बढ़ने लगती है। शरीर का वजन घुटनों पर आने लगता है, जिससे दर्द और एंठन बढ़ने लगती है। ऐसे में घुटनों को मजबूती प्रदान करने के लिए नी ब्रेण्डस का रोज़ाना अभ्यास करें। दिन में 2 से 3 बार 4 से 5 मिनट इस एक्सरसाइज़ को करने से शरीर एक्टिव रहता है।

जानें इसे करने की विधि
नी ब्रेण्डस को करने के लिए दीवार के सामने खड़े हो जाएं। अब दोनों हाथों को दीवार पर मजबूती से टिका लें। दोनों पैरों के बीच दूरी बनाकर रखें और हाथों को सहारा लेकर घुटनों को मोड़े और फिर सीधे हो जाएं। 30 सेकण्ड से 1 मिनट तक इस व्यायाम को दोहराएं। इससे टांगों की मजबूती बढ़ने लगती है।

4. लीन बैक्स - घुटनों के बल बैठकर की जाने वाली इस एक्सरसाइज़ से शरीर के पोश्चर में सुधार आने लगता है और घुटनों की तकलीफ दूर होती है। शरीर के स्टेमिना के अनुसार ही इस एक्सरसाइज़ को करें। इन सभी इंडोर एक्सरसाइज़ को करने से शरीर एक्टिव और फिट बना रहता है। साथ ही शरीर का ब्लड सर्कुलेशन भी उचित रहता है।

जानें इसे करने की विधि-इसे करने के लिए मैट पर घुटनों के बल खड़े हो जाएं। अब दोनों हाथों को आगे की ओर बढ़ाएं और बाजूओं को सीधा कर लें। इसके बाद शरीर को पीछे की ओर लेकर जाएं और फिर आगे हो जाएं। इससे थाइज़ पर जमा चर्बी से भी राहत मिल जाती है। इसे करने से घुटनों का दर्द कम होने लगता है।

बढ़ता पारा पहुंचा रही है आपकी मेंटल हेल्थ को नुकसान



गर्मी के दिनों में देर तक सोना, बाहर धूप में ज्यादा देर रहना और मील स्किप करना आपके मूड में बदलाव कर सकता है। आप ज्यादा चिढ़ीचिढ़े और गुस्सेल हो सकते हैं। ये सभी बढ़ती गर्मी में खराब हो रही मेंटल हेल्थ के संकेत हैं। दिन भर बढ़ रही गर्मी लोगों के स्वास्थ्य के लिए चुनौती बन रही है। लू का असर सिर्फ आपके शारीरिक स्वास्थ्य पर ही नहीं होता, बल्कि आपका मानसिक स्वास्थ्य भी इससे प्रभावित होता है। बढ़ती गर्मी तनाव, एंजाइटी और झुंझलाहट का कारण साबित हो रही है। दरअसल, तापमान का बढ़ता स्तर हीट स्ट्रेस को बढ़ा देता है। शरीर में पानी की कमी और मील स्किप करना दोनों ही आपकी सेहत को नुकसान पहुंचाते हैं। यह समस्या आपको और आपके प्रियजनों को प्रभावित न करे, इसके लिए जरूरी है इसके कारणों, लक्षण और बचाव के उपायों के बारे में जानना।

व्या



होता है हीट वेव का मानसिक स्वास्थ्य पर असर- देर तक धूप की किरणों के संपर्क में रहने से डिहाइड्रेशन की कमी का सामना करना पड़ता है, जिससे शारीरिक अंगों में ऑक्सीजन का प्रवाह बाधित होने लगता है। इसके चलते सिरदर्द, चक्कर आना और स्ट्रेस बढ़ने लगता है। वे लोग जो लंबे वक्त तक आउटडोर एक्टिविटी के चलते धूप में रहते हैं, उन्हें हीट एंजाइटी से दो चार होना पड़ता है। इस बारे में रिसर्चर मैडिसिन कंसल्टेंट डॉ अवि कुमार का कहना है कि गर्मी के चलते शरीर में पानी का नियमित स्तर बनाए रखना आवश्यक है। अन्यथा शरीर को ड्रिटेड, अनकॉम्फर्टेबल, एंजाइटी ए एंजिटेड और हाइपोवीलिमिया का सामना करना पड़ता है। दरअसल, गर्मी के चलते स्ट्रेस हार्मोन एग्रीवेट होने जाते हैं। इससे तनाव और हीट एंजाइटी का सामना करना पड़ता है। इस बारे में एक्सपर्ट का कहना है कि धूप की किरणों से शरीर को विटामिन डी और सेरोटोनिन की प्राप्ति होती है। इससे मूड बूस्ट करने में मदद मिलती है। मगर लगातार धूप के संपर्क में रहना तनाव को बढ़ा देता है। **ये लक्षण बताते हैं कि आप में बढ़ने लगी है हीट एंजाइटी**

1 मूड में परिवर्तन होना - हीट एंजाइटी के शिकार लोग गर्मी के मौसम में खुद को इरिटेबल, डिप्रेस्ड और अकेला महसूस करते हैं। वे हर बात पर एग्जिस्टेंस होने लगते हैं और तनाव का सामना करते हैं। लोगों को मूड स्विंग का सामना करना पड़ता है।

2 एकाग्रता की कमी - चिलचिलाती गर्मी में रहने से किसी भी कार्य पर फोकस करने में परेशानी का सामना करना पड़ता है। इससे किसी भी नई चीज़ को समझने से लेकर उसपर फोकस करने तक कई मुश्किलता का सामना करना पड़ता है।

3 नींद में बदलाव - हीट वेव्स के चलते लोगों को नींद की समस्या का सामना करना पड़ता है। जहां कुछ लोगों की नींद बाधित होने लगती है, तो वहीं कुछ लोग देर तक सोने लगते हैं, जिससे तनाव और आलस्य की स्थिति का सामना करना पड़ता है।

जिससे तनाव और आलस्य की स्थिति का सामना करना पड़ता है।

4 कंप्यूज रहना - लू के चलते मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होने लगता है, जिससे किसी भी कार्य को करने के लिए कंप्यूज का सामना करना पड़ता है। ऐसे में व्यक्ति किसी भी डिजीज को नहीं ले पाता और हर पल चिंतित रहने लगता है। इसके अलावा व्यवहार में हड़बड़ाहट बढ़ने लगती है।

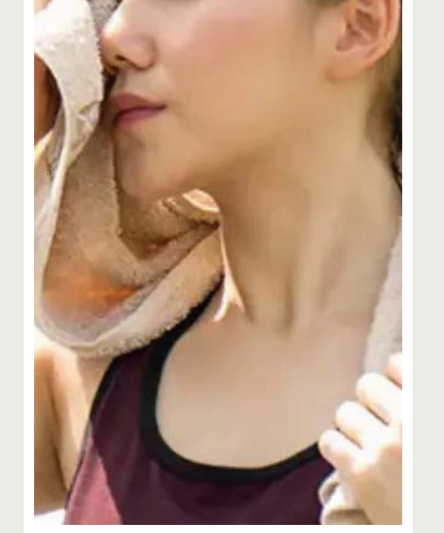
हीट वेव के दौरान मानसिक स्वास्थ्य को बचाए रखने के लिए इन बातों का रखें ध्यान

1 पर्याप्त ऑक्सीजन के लिए पानी पीते रहें गर्मी के मौसम में शरीर को निर्जलीकरण और हीट एंजाइटी की समस्या से बचाने के लिए भरपूर मात्रा में पानी पीएं। इससे शरीर में ऑक्सीजन का प्रवाह नियमित बना रहता है और शरीर एक्टिव व एनर्जी से भरपूर रहता है। शरीर को हाइड्रेट रखने के लिए हेल्दी पेय पदार्थों को अपने रूटीन में शामिल करें।

2 सुबह जल्दी उठें लंबे वक्त तक सोने से शरीर में थकान, आलस्य और एनर्जी की कमी बढ़ने लगती है। शरीर को एक्टिव और तनाव रहित करने के लिए 6 से 8 घंटे की नींद लें। एंजाइटी एंड डिप्रेशन एसोसिएशन ऑफ अमेरिका के अनुसार ज्यादा देर तक सोना तनाव के लक्षणों को बढ़ा सकता है। इसके चलते स्वभाव में चिड़चिड़ापन बढ़ने लगता है। गर्मी में सोने और उठने का समय तय करें।

3 गर्मी में बाहर न निकलें- किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए दिन ढलने के बाद और तापमान में हल्की गिरावट आने के बाद ही बाहर निकलें। इससे शरीर को हीट वेव से बचाया जा सकता है। साथ ही हल्के रंग के कपड़े पहनकर बाहर जाएं। इससे शरीर का तापमान उचित बना रहता है। इसका अलावा लाइट वेट और लूज फिटिंग के कपड़ों को ही पहनें। इससे शरीर स्वस्थ रहता है।

4 हो सके तो दिन में दो बार नहाएं शरीर और मानसिक स्वास्थ्य को हेल्दी और कूल रखने के लिए शरीर की ठंडक को बरकरार रखें। इसके लिए पंखे और कूलर के अलावा कोल्ड पैक्स और शावर की मदद लें। दिन में दो बार नहाने से बांडी टेम्परेचर उचित बना रहता है और लू की चपेट में आने का खतरा भी कम हो जाता है। गर्मी में बाथिंग स्किप करने से बचें।



मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का मीडिया संवाद: अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक पहुंचा योजनाओं का लाभ

मुख्यमंत्री ने कहा- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का 12 वर्ष का कार्यकाल विश्वास, विकास और जनकल्याण को समर्पित

प्रधानमंत्री के निर्णयों से 25 करोड़ से अधिक लोग गरीबी से उबरे, प्रधानमंत्री ने गरीब, युवा, नारी और किसान के लिए चलाई योजनाएं

प्रधानमंत्री ने राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अभूतपूर्व कदम उठाए, आतंकवाद को करारा जवाब दिया

मोदी ने वैश्विक मंच पर भारत का बढ़ाया मान, भजनलाल सरकार ने राजस्थान के विकास को प्रदान की नई दिशा:- मदन राठौड़



एक पेड़ मां के नाम पहल से प्रेरित हरियाली राजस्थान अभियान के तहत पौधारोपण हो रहा

मुख्यमंत्री ने कहा कि ग्रामीण राजस्थान की तस्वीर बदलने के लिए ग्राम विकास यात्रा और ग्राम विकास चौपाल आयोजित कर किसान, मजदूर, महिला और युवाओं से सीधा संवाद किया जा रहा है। संध्या चौपाल और संध्या आरती के माध्यम से जनता से सांस्कृतिक और भावनात्मक जुड़ाव स्थापित किया जा रहा है। प्रधानमंत्री जी की एक पेड़ मां के नाम पहल से प्रेरित हरियाली राजस्थान अभियान के तहत पौधारोपण हो रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में वर्ष 2014 के बाद देशवासियों ने गरीब कल्याण एवं विकास की योजनाओं, आतंकवाद एवं नक्सलवाद का खात्मा तथा दुनिया में भारत के बढ़ते गौरव को देखा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने जनकल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को लाभान्वित किया है। आज सभी कह रहे हैं 'मोदी है तो मुम्किन है'।



26 जिलों के किसानों को दिन में बिजली दी जा

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में हमारी सरकार ने राजस्थान में पेयजल एवं सिंचाई की विभिन्न परियोजनाओं को धरातल पर उतारने के साथ ही सुदृढ़ बनाने का काम प्राथमिकता से किया है। इसी प्रकार, कर्मभूमि से मातृभूमि एवं वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान के जरिए जल संचय को मजबूती प्रदान की जा रही है। उन्होंने कहा कि हमारे कार्यकाल में प्रदेश में बिजली उत्पादन बढ़ा है। वर्ष 2027 तक प्रदेशभर के किसानों को दिन में बिजली दी जाएगी। फिलहाल 26 जिलों के किसानों को दिन में बिजली दी जा रही है। राजईज राजस्थान का आयोजन कर 35 लाख करोड़ रूपए के एमओयू किए गए, जिनमें से 9 लाख करोड़ रूपए के एमओयू धरातल पर उतर चुके हैं।

भारत ने वैश्विक मंच पर अपनी नई पहचान बनाई: राठौड़

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए कहा कि भारत ने वैश्विक मंच पर अपनी नई पहचान बनाई है। पहले दुनिया दूसरे देशों की सैन्य क्षमता को देखती थी, लेकिन आज भारत ने भी अपनी शक्ति और आत्मनिर्भरता का परिचय दिया है। कोरोना काल में वैश्वीकरण और वितरण व्यवस्था भारत की बड़ी उपलब्धि है। राठौड़ ने कहा कि राजस्थान में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में पारदर्शी शासन की दिशा में काम हुआ है। उद्योग निवेश को बढ़ावा देने के लिए राजईज राजस्थान अभियान चलाया गया, युवाओं के हित में भर्ती प्रक्रियाओं को मजबूत किया गया और शिक्षा में विदेशी भाषाओं को भी शामिल करने की पहल की गई। केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं का उद्देश्य विकसित भारत और विकसित राजस्थान के संकल्प को जमीन पर उतारना है। राठौड़ ने कहा कि केंद्र सरकार की जनकल्याणकारी नीतियों के साथ राजस्थान में भी बदलाव दिखाई दे रहा है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में प्रदेश में युवाओं को पेपर लीक जैसी समस्याओं से राहत मिली है। केंद्र और राज्य सरकार का लक्ष्य विकास को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना और विकसित भारत के संकल्प को साकार करना है। इस दौरान 12 वर्ष की उपलब्धियों पर वीडियो फिल्म का प्रदर्शन किया गया। इस दौरान 12 साल विकास के, विश्वास के और जनकल्याण के अभियान के प्रदेश संयोजक भूपेंद्र सेनी, भाजपा प्रदेश महामंत्री श्रवण सिंह बगडी, भाजपा प्रदेश मीडिया प्रभारी प्रमोद वशिष्ठ, भाजपा मुख्य प्रवक्ता रामलाल शर्मा, विधायक एवं प्रवक्ता कुलदीप धनकट सहित भाजपा पदाधिकारी उपस्थित रहे।

जयपुर

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सेवा, सुशासन और लोक कल्याण को समर्पित गौरवशाली 12 वर्ष का कार्यकाल पूर्ण होने पर शनिवार को मीडिया से संवाद किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने सबसे लम्बे समय तक निर्वाचित प्रधानमंत्री रहने की असाधारण उपलब्धि हासिल की है। इस अवसर पर उन्होंने प्रदेशवासियों की ओर से प्रधानमंत्री को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। मीडिया संवाद में मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2014 से पहले यूपीए सरकार में हमारा देश भ्रष्टाचार, महंगाई, आतंकवाद, नक्सलवाद, नीतिगत अव्यवस्था और खराब आर्थिक हालात जैसी अनेक चुनौतियों से जूझ रहा था। ऐसे समय पर प्रधानमंत्री ने जिम्मेदारी संभाली और देश को इन चुनौतियों से बाहर निकाला तथा अपने दूरदर्शी विजन से 12 वर्षों में शासन, विकास और जनकल्याण के अनेक नए प्रतिमान स्थापित किए। उन्होंने कहा कि वर्ष 2014 के बाद प्रधानमंत्री ने प्रधान सेवक के रूप में सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास के मंत्र के साथ सभी वर्गों के कल्याण के लिए कार्य किया है।

इकोंनामी, स्पोर्ट्स, उद्यमिता और फिटनेस को अभूतपूर्व बल मिला है। उनकी प्रेरणा से बीते 12 वर्षों में वीमेन लेड डवलपमेंट का एक नया अध्याय भारत की विकास यात्रा में जुड़ा है। उनके मार्गदर्शन में सरकार ने हमेशा देश की महिलाओं को अपनी नीतियों के केंद्र में रखा है। महिलाओं के लिए शौचालय, धुआं मुक्त रसोई, गर्भावस्था में आर्थिक मदद, मुद्रा योजना, पीएम आवास एवं लक्ष्यपति वीदी योजना के जरिए सपोर्ट सिस्टम विकसित किया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि विकसित भारत के चार स्तंभों में एक प्रमुख स्तंभ हमारे किसान हैं। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में बीते 12 वर्षों में किसानों के लिए बीज से लेकर बाजार तक अनेक पहल की गई हैं। हमारे किसानों को उन्नत बीज, सिंचाई सुविधाओं, पीएम किसान सम्मान निधि, एमएसपी में बढ़ोतरी आदि के माध्यम से संवर्धन प्रदान किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री राष्ट्र प्रथम की सोच के साथ कड़े और बड़े निर्णय लेने में भी कभी पीछे नहीं हटे। इसी वजह से जम्मू कश्मीर से धारा-370 हटाना, जीएसटी लागू करना, वन रैंक वन पेंशन और भारतीय न्याय संहिता को लागू करने जैसे निर्णय हकीकत बने हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अभूतपूर्व कदम

उठाने के साथ ही आतंकवाद को करारा जवाब दिया है। उनके नेतृत्व में भारत ने आतंकवाद के खिलाफ ज़ीरो टॉलरेंस की नीति के साथ दुनिया को स्पष्ट संदेश दिया है। सर्जिकल स्ट्राइक हो या एयर स्ट्राइक या फिर ऑपरेशन सिद्ध, प्रधानमंत्री के सशक्त नेतृत्व में भारतीय सेना ने इन सभी ऑपरेशन को अंजाम दिया। ऑपरेशन सिद्ध के माध्यम से न केवल पहलगांम आतंकी हमले का बदला लिया गया बल्कि सीमा पार चल रहे आतंकी ठिकानों को भी ध्वस्त कर सैकड़ों आतंकियों को ढेर किया गया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विकसित भारत के सपने को पूरा करने के लिए मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत अभियान को गति प्रदान की। इसी वजह से आज भारत रक्षा, इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल, फार्मा जैसे अनेक क्षेत्रों में विनिर्माण और निर्यात के नए रिकॉर्ड बना रहा है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में पिछले 12 वर्षों में भारत का बुनियादी ढांचा सुदृढ़ हुआ है तथा शासन में गतिशीलता, निर्णयों में पारदर्शिता और नीतियों में दूरदर्शिता की बदौलत भारत विश्व की सबसे तेजी से विकसित होती बड़ी अर्थव्यवस्था बन पाया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि केंद्र सरकार की योजनाओं का राजस्थान को भरपूर लाभ मिला है। प्रदेश में लगभग 2 करोड़ 45 लाख मूदा

ही 21 गोबर-धन प्रोजेक्ट भी लगाए गए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में 3 करोड़ 83 लाख जन-धन खाते खुले हैं। वर्ष 2014 से पहले प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत प्रदेश में 53 हजार किलोमीटर सड़कें बनी थीं, आज यह आंकड़ा बढ़कर 86 हजार किलोमीटर के पार निकल चुका है। सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ 2014 से पहले प्रदेश में 57 लाख लोगों को मिल रहा था और आज ऐसे लाभार्थियों की संख्या 89 लाख से ऊपर पहुंच गई है। प्रदेश में वर्ष 2013-14 में प्रति व्यक्ति आय लगभग 69

हजार रुपये थी, वह आज बढ़कर 2 लाख 5 हजार रुपये पहुंच गई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर प्रदेश में अनेक कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा है। इसी क्रम में 12 जून से 20 जून तक हर जिले में जन कल्याण शिविरों का आयोजन कर चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, ऊर्जा, कृषि, ग्रामीण विकास, पंचायती राज, महिला एवं बाल विकास से संबंधित सेवाएं एक ही छत के नीचे उपलब्ध करवाई जा रही हैं।

बगरू का दर्द : अवैध बूस्टर पंप और लीकेज ने सोखा

बगरू के हक का पानी, अंतिम छोर पर हाहाकार !

सिस्टम फेल : जयपुर से बगरू आते-आते हांफी बीसलपुर लाइन, बूंद-बूंद पानी को तरसी जनता

लोक टुडे। जयपुर

राजधानी जयपुर से महज 35 किलोमीटर दूर बगरू कस्बा इन दिनों भीषण जल संकट के दौर से गुजर रहा है। कस्बे की करीब 50 हजार से अधिक की आबादी बूंद-बूंद पानी के लिए तरस रही है। भीषण गर्मी के इस दौर में बीसलपुर और चंबल पेयजल परियोजना का पानी बगरू तक पहुंचते-पहुंचते पूरी तरह गायब हो जाता है। सरकारी दावों के विपरीत जमीनी हकीकत यह है कि मुख्य पाइपलाइन के अंतिम छोर (टेल-एंड) पर बसे इस कस्बे के कई वार्डों में पिछले एक सप्ताह से नल पूरी तरह सूखे पड़े हैं। आसमान से बरसती आग और 45 डिग्री के पार जाते पार के बीच कस्बे की लाइफलाइन कहीं जाने वाली बीसलपुर पेयजल परियोजना पूरी तरह हांक चुकी है। मुख्य पाइपलाइन के अंतिम छोर पर बसे बगरू तक पानी पहुंचते-पहुंचते प्रेशर इतना कम हो जाता है कि आधे से अधिक कस्बे के लोग मजबूरन खुद के पैसे से टैंकर मंगवा रहे हैं। पेश है ग्राउंड रिपोर्ट...

रास्ते में पानी की डकैती, रसूखदारों के आगे बेबस विभाग -

बगरू तक पानी न पहुंचने की सबसे बड़ी वजह मुख्य सप्लाई लाइन में होने वाली पानी की खुलेआम चोरी है। जयपुर से बगरू के बीच रास्ते में पड़ने वाले रसूखदार लोगों, होटल मालिकों और रंगे-छपे के कारखानों ने मुख्य पाइपलाइन में अवैध



कनेक्शन पर हाई-पावर बूस्टर पंप (मोटर्स) लगाकर पानी को बीच में ही खींच लिया जाता है। इसके चलते लाइन में पानी का प्रेशर पूरी तरह खत्म हो जाता है और जब तक सप्लाई बगरू पहुंचती है, तब तक पाइपलाइन में सिर्फ हवा ही बचती है। स्थानीय निवासियों का आरोप है कि जलदाय विभाग के अधिकारियों को इस पूरी मिलीभगत की जानकारी है, लेकिन वे रसूखदारों पर कार्रवाई करने से इतर हैं।

रखरखाव के अभाव में लीकेज: रोजाना बह रहा लाखों लीटर पानी -

एक तरफ जहां कस्बा प्यासा है, वहीं दूसरी तरफ जलदाय विभाग की घोर लापरवाही के कारण रोजाना लाखों लीटर साफ पानी सड़कों और खेतों में बहकर बर्बाद हो रहा है। जयपुर-अजमेर हाईवे और बगरू को जोड़ने वाली मुख्य राईजिंग पाइपलाइन में दर्जनों जगह बड़े लीकेज हैं। कई महीनों से इन लीकेज को ठीक नहीं किया गया है। पानी के इस भारी अपव्यय के कारण टेल-एंड पर स्थित बगरू के उपभोक्ताओं तक पानी का दबाव शून्य हो जाता है। जगह-जगह बने ये लीकेज अब गंदे पानी के स्रोत भी बन रहे हैं, जिससे बगरू में दूषित जलापूर्ति का खतरा भी मंडराने लगा है।

आक्रोशित जनता का अल्टीमेटम: अब सीधे हाईवे जाम होगा -

पानी की इस किल्लत को लेकर स्थानीय जनप्रतिधियों और सामाजिक कार्यकर्ताओं में भारी आक्रोश है। वार्ड पार्षदों के नेतृत्व में व्रत जनता ने जलदाय विभाग के स्थानीय कार्यालय पर मटका फोड़ प्रदर्शन कर अधिकारियों को चेतावनी दी है। आंदोलनकारियों का साफ कहना है कि यदि अगले 48 घंटों के भीतर सुचारु जलापूर्ति बहाल नहीं की गई, अवैध बूस्टर पंपों को जब्त नहीं किया गया और लीकेज दुरुस्त नहीं हुए, तो बगरू की जनता जयपुर-अजमेर राष्ट्रीय राजमार्ग (हाल-48) को पूरी तरह जाम कर देगी, जिसकी पूरी जिम्मेदारी प्रशासन की होगी।

पानी के लिए रतजगा करने को मजबूर महिलाएं -

इस दोहरी मार का सबसे ज्यादा असर बगरू नगर पालिका के वार्ड नंबर 5, 8, 12, 19 और 24 जैसी टेल-एंड पर स्थित कॉलोनीयों में देखने को मिल रहा है। इन इलाकों में पिछले 7 से 10 दिनों से सरकारी सप्लाई पूरी तरह टप है। जिन गलियों में पानी आता भी है, वहां रात के 2 या 3 बजे बमुश्किल 10 मिनट के लिए बेहद कम प्रेशर से पानी टपकता है। इस कारण क्षेत्र की महिलाओं को पानी के लिए पूरी-पूरी रात जागकर इंतजार करना पड़ रहा है। सुबह होते ही कामधंधा छोड़कर लोग साइकिलों, बाइकों और

हाथटेलों पर टंकियां लादकर पानी की तलाश में निकल पड़ते हैं।

टैंकर माफिया की चांदी, 700 रुपये तक पहुंची एक फेरे की कीमत -

सरकारी सिस्टम के पूरी तरह फेल होने का सीधा फायदा निजी टैंकर माफिया उठा रहे हैं। कस्बे में पानी के टैंकरों की डिमांड अचानक चार गुना बढ़ गई है। मजबूरी का फायदा उठाकर टैंकर चालक मनमाने दाम वसूल रहे हैं। पहले जो पानी का टैंकर 300 से 400 रुपये में आसानी से मिल जाता था, उसके लिए अब 700 से 800 रुपये तक वसूलें जा

इनका कहना है

पिछले कई दिनों से घर के नलों में पानी की एक बूंद नहीं आई है। रात को तीन बजे तक जागकर इंतजार करते हैं, फिर भी निराशा ही हाथ लगती है। 700 का टैंकर उलवाना हमारे बजट के बाहर है।

- लक्की छीपा, स्थानीय निवासी

रास्ते में बड़े होटलों और कारखानों वाले धड़ल्ले से बूस्टर पंप चलाकर पानी खींच रहे हैं। विभाग को सब पता है, लेकिन कोई सुनने वाला नहीं है। अगर दो दिन में पानी नहीं आया तो हम हाईवे पर उतरेंगे।

- संदीप पाटनी, सामाजिक कार्यकर्ता

रहे हैं। एक मध्यमवर्गीय और गरीब परिवार के लिए हर तीसरे दिन इतना महंगा पानी खरीदना आर्थिक रूप से कमर तोड़ने जैसा साबित हो रहा है। लोगों का कहना है कि वे कमाएं या सिर्फ पानी खरीदने में ही अपनी गादी कमाई लुटा दें।